• पूजा...

तिब्बती झंडे

लेह-लद्दाख या बौद्ध मठों पर अक्सर आपने रंग-बिरंगे झंडे जरूर देखे होंगे। इन झंडों तिब्बती झंडे कहा जाता है। अक्सर ये आसानी से कारों के बैक पर या फिर मोटर साइकिल पर आसानी से नजर आ जाते हैं। आजकल इनको लोग एक सजावट के सामान की तरह इस्तेमाल करने लगे हैं। मगर इस झंडे का भी अपना अलग धार्मिक महत्व है। आज हम आपके लिए तिब्बती झंडों से जुड़ी कुछ जानकारी लेकर आए हैं, जिनके बारे में जानना बेहद जरूरी है। तिब्बती झंडों में इस्तेमाल होने वाले लाल, हरे, सफेद, पीले और नीले रंग किसी न किसी चीज को दर्शाते हैं। इसमें हरा रंग पानी, लाल रंग आग, सफेद और नीला रंग हवा, पीला रंग धरती का प्रतीक है इसके साथ ही ये चारों दिशाओं को भी दर्शाते हैं।

▶ इन्हें कभी जमीन पर नहीं रखना चाहिए इन्हें जमीन पर रखना अशुभ माना है, इसलिए हमेशा इन्हें ऊंचाई पर लगाएं ये शुभता लेकर आता है। झंडे का उड़ना शुभ माना जाता है झंडों का हवा में उड़ना शुभ माना जाता है। ये संकेत होता है कि आपकी प्रार्थना ईश्वर तक पहुंच गई

है। ओम मनी पदमे हम-मंत्र ये मंत्र करुणा, नैतिकता, धैर्य, परिश्रम, त्याग और ज्ञान जैसे मूल्यों का एक संयोजन है। कहते हैं कि इसे दोहराने से आपके अंदर की ईर्ष्या, अज्ञानता, लालच और आक्रामकता धीरे-धीरे खत्म हो जाती है।

▶ इन्हें ऐसी जगह लगाएं जहां ये हर समय लहराते रहें इस झंडे को हमेशा ऊंचाई पर लगाना चाहिए, ताकि ये हमेशा लहराते रहें। ऐसा माना जाता है कि इनके लगातर लहराने से एक तरंग निकलती है जो हवा के साथ आपकी प्रार्थना को ईश्वर तक पहुंचाती है।

▶ उपहार के रूप में इन्हें पाना बहुत ही शुभ माना जाता है तिब्बती झंडे का गिफ्ट के रूप में मिलना शुभ माना जाता है। इसलिए जब भी आपका कोई दोस्त लेह-लद्दाख की यात्रा करे उससे इसे लाने के लिए जरूर कहें। ये दो प्रकार के होते हैं तिब्बतियन प्रेयर फ्लैग दो प्रकार के होते हैं। एकक्षैतिज जिन्हें Lung Dar और लंबरूप यानी सीधा खड़ा जिन्हें Dar Cho कहते हैं। तिब्बती न्यू ईयर पर इन्हें लगाना शुभ माना जाता है। इन्हें लगाते समय अगर आपकी फैमिली भी साथ होती है, तो उनके जीवन पर भी इसका सकारात्मक असर पड़ता है। अगली बार तिब्बती झंडे को लगाते समय इन सब बातों का ध्यान रखना।

• पावन...

गंगा जल का महत्व...

हिंदू धर्म के मानने वाले श्रद्धालु गंगा को नदी नहीं, बल्कि मां की तरह पूजते हैं। गंगाजल को स्पर्श करने मात्र से पापों से मुक्ति मिलती है तो वहीं दर्शन मात्र से जीवन के कष्टों से उद्धार हो जाता है। ऐसे कई वैज्ञानिक दावे भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि गंगा के जल में औषधीय गुण हैं। गंगाजल से स्नान करने अथवा इसके सेवन से कई रोगों से मुक्ति मिलती है। गंगा का जल व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता लेकर आता है, यही वजह है कि धर्म कर्म के कार्यों में इसे शामिल किया जाता है।

▶▶ वास्तु के अनुसार गंगाजल व्यक्ति के जीवन की सभी समस्याओं को दूर कर सकता है। लोगों के लिए गंगाजल किसी वरदान से कम नहीं है। वास्तुदोष के कारण कई बार घर परिवार में कलह रहती है और लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। इसकी वजह से जीवन में तनाव बना रहता है। आप घर ही नहीं, अपने दुकान, कारखाने अथवा दफ्तर में रोज सुबह पूजा के पश्चात गंगाजल का छिड़काव करें। आपको खुद बदलाव महसूस होगा।

▶▶ यदि घर में कोई सदस्य ऐसा है जो बात बात में उग्र हो जाता है और जिसकी वजह से माहौल गर्म हो जाता है तो घर की स्त्री को घर तथा परिवार के सदस्यों के ऊपर गंगा जल का छिड़काव करना चाहिए। ऐसा नियमित तौर पर करें। इस उपाय से व्यक्ति का मन शांत होगा और घर परिवार में भी सुकून बना रहेगा। सेहत के लिए लाभकारी विज्ञान भी ये स्वीकार कर चुका है कि गंगाजल से स्नान अथवा इस पवित्र जल का सेवन करने से बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।

▶▶ अगर आप रात में बुरे और डरावने सपनों से परेशान रहते हैं तो ऐसे में सोने से पहले अपने बिस्तर पर गंगाजल का छिड़काव कर लें। आप चैन की नींद सो सकेंगे और बुरे सपनों से भी छुटकारा मिलेगा

▶▶ ग्रह-नक्षत्र की स्थिति ठीक न होने पर व्यक्ति को जीवन में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अगर कोई ग्रह दोष से परेशान है तो उसे हर सोमवार के दिन शिवजी की पूजा करनी चाहिए और उन्हें गंगाजल चढ़ाना चाहिए। साथ ही, शनिवार के दिन पानी में थोड़ा सा गंगाजल मिलकर पीपल के वृक्ष पर चढ़ाएं। आपकी समस्या का समाधान होगा।

▶▶ आमतौर पर छोटे बच्चों को बुरी नजर बहुत जल्दी लग जाती है। अगर घर के किसी सदस्य या बच्चों को नजर लग जाए तो उस पर गंगाजल के छींटे मारें। जल्द ही बुरी नजर का प्रभाव उतर जाएगा।

हिन्दू धर्म में मोहिनी एकादशी का विशेष महत्व है। इस एकादशी को बेहद फलदायी और कल्याणकारी माना गया है।

मान्यता है कि इस एकादशी को व्रत रखने से घर में सुख–समृद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि माता सीता के विरह से पीड़ित भगवान श्री राम और महाभारत काल में युद्धिष्ठिर ने भी अपने दुखों से छुटकारा पाने के लिए इस एकादशी का व्रत पूरे विधि विधान से किया था...

मोहिनी एकादशी...

मोहिनी एकादशी का बड़ा महत्व है। जिस तरह हिंदू धर्म में कार्तिक माह बेहद पवित्र माना जाता है ठीक उसी तरह वैशाख महीने में आने वाली मोहिनी एकादशी को भी पुराणों में बेहद पावन माना गया है। मान्यता है कि मोहिनी एकादशी व्रत बेहद फलदायी है। हिन्दू पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस एकादशी के प्रताप से व्रत करने वाला व्यक्ति मोह-माया से ऊपर उठ जाता है। कहते हैं कि इस व्रत को करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि भगवान विष्णु ने वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन ही मोहिनी का रूप धारण किया था। भगवान ने अपने इसी मोहिनी रूप से असुरों को मोहपाश में बांध लिया और सारा अमृत पान देवताओं को करा दिया था। हिन्दू पंचांग के अनुसार वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मोहिनी एकादशी कहते हैं। इस बार मोहिनी एकादशी 3 मई 2020 को है।

मोहिनी एकादशी का महत्व: हिन्दू धर्म में मोहिनी एकादशी का विशेष महत्व है। इस एकादशी को बेहद फलदायी और कल्याणकारी माना गया है। मान्यता है कि इस एकादशी को व्रत रखने से घर में सुख-समृद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि माता सीता के विरह से पीड़ित भगवान श्री राम और महाभारत काल में युद्धिष्ठिर ने भी अपने दुखों से छुटकारा पाने के लिए इस एकादशी का व्रत पूरे विधि विधान से किया था।

मोहिनी एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर घर की साफ-सफाई करें। इसके बाद स्नान करने के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें व्रत का संकल्प लें। अब घर के मंदिर में भगवान विष्णु की प्रतिमा, फोटो या कैलेंडर के सामने दीपक जलाएं। इसके बाद विष्णु की प्रतिमा को अक्षत, फूल, मौसमी फल, नारियल और मेवे चढ़ाएं। विष्णु की पूजा करते वक्त तुलसी के पत्ते अवश्य रखें। इसके बाद धूप दिखाकर श्री हरि विष्णु की आरती उतारें। अब सूर्यदेव को जल अर्पित करें। एकादशी की कथा सुनें या सुनाएं।

एकादशी से एक दिन पूर्व ही व्रत के नियमों का पालन करें। व्रत के दिन निर्जला व्रत करें। शाम के समय तुलसी के पास गाय के घी का एक दीपक जलाएं। रात के समय सोना नहीं चाहिए। भगवान का भजन-कीर्तन करना चाहिए। अगले दिन पारण के समय किसी ब्राह्मण या गरीब को यथाशक्ति भोजन कराए और दक्षिणा देकर विदा करें। इसके बाद अन्न और जल ग्रहण कर व्रत का पारण करें।

व्रत के नियम: - कांसे के बर्तन में भोजन न करें। नॉन वेज, मसूर की दाल, चने व कोदों की सब्जी और शहद का सेवन न करें। कामवासना का त्याग करें। व्रत वाले दिन जुआ नहीं खेलना चाहिए। पान खाने और दातुन करने की मनाही है।

व्रत कथा : पौराणिक कथा के अनुसार किसी समय में भद्रावती नामक एक बहुत ही सुंदर नगर हुआ करता था जहां धृतिमान नामक राजा राज किया करते थे। राजा बहुत ही पुण्यात्मा थे। उनके राज में प्रजा भी धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग लेती। इसी नगर में धनपाल नाम का एक वैश्य भी रहता था। धनपाल भगवान विष्णु के परम भक्त और एक पुण्यकारी सेठ थे। भगवान विष्णु की कृपा से ही इनकी पांच संतान थीं। इनके सबसे छोटे पुत्र का नाम था धृष्टबुद्धि। उसका यह नाम उसके धृष्टकर्मों के कारण ही पड़ा। बाकि चार पुत्र पिता की तरह बहुत ही नेक थे, लेकिन धृष्टबुद्धि ने कोई ऐसा पाप कर्म नहीं छोड़ा जो उसने न किया हो। तंग आकर पिता ने उसे बेदखल कर दिया। भाइयों ने भी ऐसे पापी भाई से नाता तोड़ लिया, जो धृष्टबुद्धि पिता व भाइयों की मेहनत पर ऐश करता था। अब वह दर-दर की ठोकरें खाने लगा। ऐशो-आराम तो दूर खाने के लाले पड़ गए। किसी पूर्वजन्म के पुण्यकर्म ही होंगे कि वह भटकते-भटकते कौण्डिल्य ऋषि के आश्रम में पंहुच गया। जाकर महर्षि के चरणों में गिर पड़ा। पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए वह कुछ-कुछ पवित्र भी होने लगा था। महर्षि को अपनी पूरी व्यथा बताई और पश्चाताप का उपाय जानना चाहा। उस समय ऋषि मुनि शरणागत का मार्गदर्शन अवश्य किया करते और पातक को भी मोक्ष प्राप्ति के उपाय बता दिया करते। ऋषि ने कहा कि वैशाख शुक्ल की एकादशी बहुत ही पुण्य फलदायी होती है। इसका उपवास करो तुम्हें मुक्ति मिल जाएगी। धृष्टबुद्धि ने महर्षि की बताई विधिनुसार वैशाख शुक्ल एकादशी यानी मोहिनी एकादशी का उपवास किया। इसके बाद उसे पापकर्मों से छुटकारा मिला और मोक्ष की प्राप्ति हुई।

• क्या है...

गुस्से का कारण

अहंकार और क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। हमारे आसपास मौजूद नकारात्मक ऊर्जा हमें क्रोध में आने या अहंकार के लिए प्रेरित करती हैं। यह नकारात्मक ऊर्जा हमारे भीतर मानसिक विकार भी उत्पन्न करती हैं। वास्तु में कुछ ऐसे उपाय बताए गए हैं, जिन्हें अपनाने से हम क्रोध और अहंकार से दूर रह सकते हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में। सुबह उठकर धरती माता को प्रणाम करें। गंदगी हमेशा क्रोध को उकसाती है। ऐसे में अपने घर या प्रतिष्ठा को स्वच्छ रखें। रोजाना कुछ देर मौन रहने का प्रयास करें। सूर्यदेव को जल अर्पित करें। ऐसा करने से स्वास्थ्य लाभ तो मिलता ही है क्रोधी स्वभाव भी शांत होता है। घर में सुबह एवं शाम पूर्व दिशा में दीपक जलाने से क्रोध और अहंकार की भावना समाप्त हो जाती है। जहां स्त्री कष्ट में रहती है वहां कभी खुशियां नहीं आ सकती। ऐसे में घर में सभी को प्रसन्न रखने का प्रयास करें। चांदी के गिलास में पानी और दूध का सेवन करें। हनुमान जी की उपासना करें। हनुमान चालीसा का नित्य प्रति पाठ करें।

• ये जरूर करें...

❑ सुबह उठें तो सबसे पहले ईश्वर का स्मरण करें। नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें। बच्चे मन से निर्मल होते हैं। ऐस में बच्चों से दान अवश्य कराएं। ऐसा करने से पूरे परिवार को सौभाग्य की प्राप्ति होती है। अमावस्या के दिन किसी निर्धन को भोजन कराएं। पितरों को सच्चे मन से याद करें। गोमाता को धरती पर ईश्वर का वरदान माना जाता है। घर में बन रहे भोजन में से गोमाता का भाग अवश्य निकालें। ऐसा करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। रात को सोते समय एक बर्तन में पानी भरकर बिस्तर के पास रख दें। सुबह उठकर वह पानी किसी पौध में चढ़ा दें।